

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

सर्वं भक्तनामसु बलिस्तु यच्च गवः पादुधाय नायाय ॥ आदौ लिचो मंगु नमस्तु लगव्ये ॥

धनसिद्धयः मधुलथिलः

यस्य पूजा दवपूजा विधित्थं ॥

निनाऊनयः गवविद्यः

गु. कासकगुलिमधुलवाय ॥

उवजनकदं ॥

दुहृत्वा नसदृष्टी यश्च वनदसि सा सर्वं विदधानमा लरुयं धीया ह जाया रुमी वा मर्गः

॥ अभायपाक्षला कषयस्य शुक्ला वृमिवरमाह ॥ कायां कक्ष

॥ अभायपाक्षला कषयस्य शुक्ला वृमिवरमाह ॥ कायां कक्ष

स्नानकर्म मुक्तिः का कन विमर्जन समाधि कक्ष सगवनाः

॥ थलि. विषयि. गुनमधुलदनक. मरुपूजा ॥ रावना ॥

लोहागिनका ॥ थनलि. पोनासन अरुदलयश्चासस्व

॥ मरु ॥ अंखधुना रुद्रं फट् ॥ अंमदिनी वजिरुव. वज्रवन्ध

॥ अंनमा धी अभायपाक्षला कषयस्य शुक्ला वृमिवरमाह ॥ कायां कक्ष

॥ अंनमा धी अभायपाक्षला कषयस्य शुक्ला वृमिवरमाह ॥ कायां कक्ष

हि क क म लु न च क म ल द लु रु मी पू र्क व न्द रू प न म ध्व नं छि न सा ला का नू कं पा म य ॥ २
 ॥ रा व ना ॥ अं स् रा व लु द्वा श र्व ध म्मा ध्वा रा व लु द्वा र्द ॥ हु न्य गो रु न व रु स् रा वा त्म का
 र्द ॥ अं म टि कि स र्व स त्व ध
 न ॥ ॥ थ न अं ग न्या स ॥ न ल रु मा ॥ की का न धा मा य पा धी ला क ध्व न मा त्मा नं रा व य
 को न ल च न्द्र म लु ल ॥ च ॥ द कि ल रु क्त आ ॥ का न ल सूर्य म लु ल ॥ स ॥ वा म रु क्त अ ॥
 कं ॥ अं स र्व क थ ग क व जा ॥ क ॥ अं वूं आं कि र्व र्दं ॥ ख ॥ अं लां मां पां कां वं ॥ ला रु क पा य
 क थ ॥ अं आ ॥ वि ज या य र्दं ॥ नू ग ड ॥ अं र्दं क य वि ज या य र्दं ॥ क रु ॥ अं स् रा व न दा य र्दं ॥ पा द द थ
 अं अ रु य प्र दा य र्दं स् रा हा ॥ अं ॥ ॥ अं ग न्या धा ॥ धी ल ॥ अं क या य र्दं ॥
 ॥ धी ल ॥ अं मे णी य र्दं ॥ च रु ॥ अं की कि ग र्दं ॥ क र्द ॥

ॐ वज्रपाणी हूं ॥ क्षासगां खग हूं ॥ जिक्का ॥ ॐ लाक्खे वज्र हूं ॥ मन ॥ ॐ मेइर धा य हूं ॥ पाद दध्या ॥
ॐ सर्वस्वी वज्रविष्णु म्हाय हूं ॥ सर्वांगध्या ॥ ॐ समन रुद्राय हूं ॥ ॥ क० वा हूं ॥ ॐ अकिं नाय हूं
॥ खवा हूं ॥ ॐ अय नाजिना य हूं ॥ ॥ मखवां हूं ॥ मालो न्यप्रम दध्या य हूं ॥ हृदि ॥ ॐ हूं
अकालम एष समक्ष हूं ॥ ॐ यो ॥ ॐ हूं धनदा य हूं ॥ खपां ॥ ॐ विष्णु न्वा य हूं ॥ ॥
ॐ आकर्ष हूं ॥ वज्रां हूं ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ लिङ्गमाद्यपाक्षमलुलाधिष्ठान ॥ सर्वसत्त्वानां विरुं
सूक्ष्मप्रकृतिमलं ॥ सम करुडं विरुगं ॥ लवमलुलमरुमं ॥ ॥ आवमन ॥
ॐ आ॥ ॐ अमाद्यपाक्षलाक ध्वलारुद्रा न काय प्रव न सत्का नाय ॥ आवमनं ॥ पां क्रमधीय किं
ह्लाहा ॥ ॥ स्वीमलुल उयकं पिजासकय ॥ ॐ अमाद्यपाक्षमलुल सर्वविद्या न्ना न य हूं ॥

स्नानवायकं ॥ ^ॐ अ० माघपाक्षलायै नमः वज्रपूर्य्यपनिष्कृत्वा हा॥ दथस ॥ अं जीं भि ला
 कविजयाय वज्रपूर्य्यपनिष्कृत्वा हा॥ इति नमः ॥ अं अ० माघपाक्षलायै नमः वज्रपूर्य्यपनिष्कृ
 त्वा हा॥ खड्गस ॥ अं अ० नमः
 वज्रपूर्य्यपनिष्कृत्वा हा॥
 ॥ अं आर्यवर्धनाय नमः वज्र
 पनिष्कृत्वा हा॥ इति नमः ॥
 + पिचाकपलसंवाय ॥ अं स्नानदक्षिणनचवाधिसत्वाय महासत्वाय वज्रपूर्य्यपनिष्कृत्वा हा॥ अं
 गुरुगुरुनचवाधिसत्वाय महासत्वाय ॥ अं आकाशेश्वर नचवाधिसत्वाय म० ॥ अं सूर्य गः

२

२

हृन् न च ॥ अं अनि क्रि फ धू न न च ॥ अं न च पा सि न च ॥ अं स म क रु ड न च ॥ अं स हा स्तु म
पा फ न च ॥ अं स र्व सि व न क्ष वि स्तु रि न च ॥ अं स र्व सु ल न च ॥ अं स र्व र्थ स न न च ॥ अं सा
ग न म कि न च ॥ अं ध र्म ध
॥ अं मे रु थ न च ॥ ॥
स्फु ट य ॥ प ॥ अं व ज्ञां व
जा य ॥ ने ॥ अं आ र्थ दी य
वा य इ ॥ पं चा य चा न पू जा ॥
म का र्त्तु कि र्त्तु मो लि न मा मि अ मा द य पा ठी ॥ अं का न स रु वा ना र्थ कं नू र्त्तु र्थ ति ग्ध मा न र्त्तु
न न च ॥ अं पि थो व न ला च न न च ॥ अं अ ध्व रु स्तु न च
अं व ज्ञां कू ण य वा प ॥ अं व ज्ञां वा ण य ॥ दे ॥ अं व ज्ञः
हा य ॥ ३ ॥ अं आ र्थ पू षा ना य ॥ अ ॥ अं आ र्थ धू य ना
ना ना य ॥ अं आ र्थ ग न्ध ना ना य ॥ २ ॥ थ न ला क पो लं
॥ सु कि ॥ ला क ध्व नं हि न व ण नं अ मा द य रु ल सा ग नं अ
॥ सु कि ॥ ला क ध्व नं हि न व ण नं अ मा द य रु ल सा ग नं अ

दधुःपूकःथनखअलाहानिनधजलपविश्याकनरुनंसमस्तुलाकयामकवृष्ठाव
 कुरुयाअविश्याकस्तुथिंमपनमध्वनयाकेसदासर्वकालेननभानरुलो॥ ॥
 कुनि॥मधनकनगोन
 मंगविकाणिनमनिध
 क्षीलाकनार्थ॥
 न॥अंसर्वमाथागनाक्ष
 सुलमूरुमं॥
 मधुलउयकपीजासुनयाअंवृद्धमधुलसर्वविद्यानूत्सानयकं॥

कूलसनायदानं कनधकमुगचमनीमलंछानध
 जपाउवांक्षीवाधिपानंरुकलरुवननाथपाउवां
 ॥थनवृद्धमधुलाधिवे
 कंसर्वमाथागनालयी॥क्षकधर्मागुहनात्मादक्षम
 ॥लखकयमाअंवृद्धमधुलदवनायअर्यप्रकिरुस्वाहा॥ ॥स्नान
 ॥थनस्नानवायकं॥

मः सर्वसत्त्वा नात्मा नूरु नायाः सम्यक् वाङ्मो प्र किष्ण प ना यः ॐ आ १ सु रा क व ऊ रु ष्य हा द्रं
फट्त्वा हा ॥ गु ॥ ख क न ॥ सा १ रुं च व ना मा च व द र्भि का १ य यः ॐ मे दि व स म त्या दा यः
या व दा वा धि म शु ल निः ष द ना ॥ रु गु नू रु ना थः ग व न वू डि य नि सः थ व २ ना म न थ
थं द ष ना या दा ॥ थ नि या दि न सः थ गु लि ध र्म ना य या कः ग व ल ना धा न सा वू ह या
म शु ल ख शु म रु क न ॥ नि ॥ वू ह रु ग व न म हा का नू षि कः स र्व द र्भि नः स र्व व वि रु
या नू र्म ॥ वू ह रु ग वा श य व ग थि म् ॐ ह व न धा न सा क नू षा व न स र्व रु रु क रु विः
या व रु मा न सि अ म् स म रु द क रु क ना ख हा व अ वि श्र क स म रु वे लि र्था रु य मा च क म् ॥ ॥
म हा पू नू र्व अ रु थ का य अ नू रु न का यः ष न षी ग रु मि द्रि य दा ना म र्थ ॥ क अ ध पू नू य ना नाः

वि

वि

ससु नभाचकमजिग. कारु ल्यमद्रु नी नथथि म्वृद्धया क. जियनिष्ठनक्षत्रान्मनूया लाः
 कसल्लसु रुयाउ विष्णु कसु या क॥ ॥मलुलदा रुलय॥ गथा॥ ॐ ह्ययं सारुगवान्
 हं न. समुक्तं वृद्ध विद्याच नक्षत्रं पन्नसुगमं लोकविद नुरु नृप नृष दस्युः ॥ न
 थिष्ठास्तु. दवानां मनूया नौ च वृद्धा रुगव न वृद्ध न जाय ॐ दीप्य मलुलनिर्गो
 कयामिष्ठा ववी गोधर्मम शुलाधिष्ठान ॥ ॥ कधर्मा यस्मै रुक्म ह्य न च यो विध्यध
 कं ॥ समनुरुद्र कायायं राख मलुलमुरुमं ॥ ॥ आचमन ॥ अंधर्ममलुलद
 वनाय अर्घ्यं प्रणि कृत्वा ह ॥ ॥ स्वा. ड. क ॥ अंधर्ममलुलसर्वविद्या नृत्सा नय दं ॥ ॥
 स्वां वाय ॥ अं आर्य प्रह्लाया नमि नाय वज्रपूष्यं प्रणि कृत्वा ह ॥ ॥ द ॥ अं आर्य गन्धर्व ह्य यः ॥

नामयुग्मं ॥ थनामाऽवेवर्हि कसंघया कःमिपनि हानलान् थसंघशयूवगधिदधालसाः
 समस्तसत्त्वप्राप्तिमूक्तिः ॥ सीविद्या कः ॥ आर्यावलाकिटध्वजगणदकाशाश्च कुरुयाजवि
 द्वाकः ॥ यजमन्त्रनसंघया कः ॥ नलान् ॥ ॥ मः ॥ दागापसकिर्षं ॥ ॥ ॥ कायः
 हिरुलप्रकियन्नगाः ॥ ॥ कायहिरुसकिर्षं ॥ ॥ सदागामिनिहिरुलप्रकियन्नगाः ॥
 सदागामिनिहिरुलप्रकियन्नगाः ॥ ॥ अनागामिनिहिरुलप्रकियन्नगाः ॥ अनागामिनिहिरुल
 सधोऽवदनीयं ॥ ॥ प्रोवदनीयं ॥ समाकननीयं ॥ अकलिकननीयं ॥ अनूरुनयूष
 कः ॥ दकिनीधोः ॥ लाकस्यः ॥ कसेसंघनत्वायः ॥ दयूषमधुलनियो कयामि ॥ ॥
 ॥ असाद्यपासमधुलाधिष्ठानाः ॥ सर्वसत्त्वमहाचिरुः ॥ सधप्रकृतिनिर्मलं ॥ समकुरुदचिरायः

राघवमधुलमरुमी॥ ॥ आचमन ॥ जं आ ॥ ४ ॥ जं आ ॥ माघपाठा लाक ध्वन मधुल रु दान काय
 प्रवजसला नाय पाशार्ध आचमन ॥ प्री क म धी प्र कि रु स्वाहा ॥ ॥ स्वा ॥ ३ ॥ न ॥ जं आ ॥ माघ
 पाठा मधुलमरुविद्यान ॥ स्नान यद् ॥ ॥ स्नाने वा ॥ जं आ ॥ माघपाठा लाक ध्व
 नाय वज्रपूषी प्र कि रु स्वाहा ॥ दथ ॥ जं ॥ ४ ॥ प्री लाक विजयाय ॥ ॥ रु ॥ जं ॥ जं आ ॥ माघपाठा
 ॥ प्र कि रु नाय ॥ ॥ रु ॥ जं ॥ ॥ जं आ ॥ माघपाठा लाक ध्व
 जं आर्य ना नाय ॥ ॥ रु ॥ जं ॥ ॥ जं आ ॥ माघपाठा लाक ध्व
 जं आर्य रुय गी वाय ॥ ॥ रु ॥ जं ॥ ॥ जं आ ॥ माघपाठा लाक ध्व
 हासलाय वज्रपूषी प्र कि रु स्वाहा ॥ ॥ जं ॥ ॥ जं आ ॥ माघपाठा लाक ध्व

नथि॥ ॥ आ नमः॥ अं सं घ म धु ल द व ना य अ र्घ्यं प्र कि ण्ण स्वा हा॥ ॥ स्वाः उः कः॥ अं सं
 घ म धु ल सर्व वि घ्ना न्ना न य हं॥ ॥ स्वा न वा य॥ अं आ र्था व ला कि ण्ण ना य व ज पू र्ण
 प्र कि ण्ण स्वा हा॥ द थ सा॥ अं
 सा॥ अं आ र्थं मे म क रू डा य॥ आ र्थं मे की य॥ कू ड न॥ अं आ र्थं रा ग हा ग ऊ श य॥ ख व
 सा॥ अं आ र्थं मे म क रू डा य॥ थ ड न॥ अं आ र्थं व ज पा ल य॥ ऊ ड सा॥ अं आ र्थं मे क रू डा
 य॥ ख का थ॥ अं आ र्थं सर्व सी व रू वि ष्णु रिय॥ ख थ थ॥ अं आ र्थं कि कि ग रू
 य॥ ऊ थ थ॥ अं आ र्थं ख ग हा य॥ ऊ का थ॥ प र्वे श य चा न य रू डा॥ ॥ सु नि चः
 त्वा नः॥ प्र कि य न्ना क रू व रू ख स त्वा द वि ष्णु वि षा च त्वा न व रू ल सि ना स म न ना ण ना मः
 हा या गि षा॥ ॐ ह्य ह्ये व न प रू ग ला रू ग व ना य सि ना हा वा क ना प्र हृ णी ल स मा धि क य व य

ॐ कान्तं वनाथं कन्यामनिग्धमानसं अक्षय्यामनामानां लोकनाथं नमामि ॥

ष, संद्याय कस्मै नमः ॥ वलि ॥ अं नमो लोका नाथाय दवा सु न न न य क ना क सा रि वं दि
 क या द मा यः अं हा स न न क सु लो हा न क्षाय चि ला त्य ना यः म हा का नू क्ष का यः ॐ दे व लि यः
 अं गृ हा दि स हि र्गः गृ हा २ म म सर्व स त्वा ना यः न न का दि इ ४ त्व ला न क्षायः उ ह्व न २
 स म ह्व न २ व ह्व स त्वा नः ध मे स त्वा नः स त्वा नः स त्वा नः स त्वा नः स त्वा नः अं आ ४ की रं प
 स्वा हा ॥ त्व ॥ सा ३ रं ३ व ना मा न व द क्षि का त्वा य ॐ म दि व स म त्वा या यः या व दा
 वा धि म ह्व ल नि ख ह्व ना ॥ नि ह्व गृ हा ना थ ग व न ष डि य नि सः थ अ २ ना म न थ थ द क्षि ना
 या ना व थ नि या दि न सः थ गृ लि ध मे ना थ या कः ग व ना ना वा धि स त्वा म ह्व ल त्व ह्व म ह्व ल ॥ ॥
 अं व र्ति क स त्वा न क्ष ग ह्व मि य इ ना आ र्था व ला कि ढ ह्व नः अं व र्ति क वा धि स त्व १ ग हा ना म यं ॥
 थ ला ना अं व र्ति क स त्वा ना क डि य नि सः अं अ नः थ स त्वा न व ग थि क धा ल सा स म स त्वा ना मि म
 किं की र्ति वि श्व क मः आ र्था व ला कि न क्ष नः ग द को यां ह्व ह्व या अ वि श्व क म य न स त्व नः मं य या क स न व क्ष नः ॥ १

[illegible]

लपृष्टि मः डरु नः अग्निः नेशयः वायुः ॥ १ ॥ नः अर्धः दुर्धः धमि दिगर्ध निष्ठा कः रुगव नरुथाः
 गरुद कः गनर्धः रुर्न बाधिसत्त्व दकोर्धः गुनूडया ध्याः थथियनि स द्वाअनः क्रियनि स नः थवर
 नाम नः खजाभाः क्रियनि स
 या ना पाय दयिअः रुचंसम
 वव्या कया रा खसंदयव
 थगुलिऊ नम स या दः रुर्न द
 कल्य ॥ ॥ कत्सर्वमर्क यि लुभित्वा रुल यित्वा सर्ववृद्ध बाधिसत्त्वः नामाचार्यस्या किकः
 अथ या वनया प्रवनया प्रकिदधानया जाननसेन लपृष्टि दया मि ॥ नि ॥ रुनाथः रुगु

८

८

थसकलपायः कृगुलिया दाजः गलमूदाजः डलि गधनकायः समरु कथा गनवाधिसत्वया कृ
अनः गुनयानिकरुसकृवनः प्रवनयादं विष्णु कः दमनायादं विष्णु कथासः थर्थि कृलामो जसकृ
अनः किमिसनः थर्मपायः
समरु भाजनकृनादनाथः
आदियार्कप्रकिविजगा
षूयाभिरुमषूः अकहाकृ
कृमिसः प्रकमनः प्रकविरुयाजधकं गुनन आग्यावियां खरुनः गथधानसाः कृआयाः वृद्ध
पूययनिसनः गवाभाधानसाः किवनवरुनयाजविष्णु कः थनाभायाभिस्यायगुलिसनसम

या दागुलिः सयानः कृलयानयनिरु ह्युमनधायायव
॥ समन्यादुर्जरुदकः यथा कआर्याः रुकाः यावकीवः प्रा
निर्दुरुदधुः निरुकाः सुलकिनादयावकाः सर्वसत्त्वः
ककृकृटपिपिलीकामूपादायः ॥ गु ॥ रुमिष्यपनि

यशला

मायासिमस्यामायासि स्यायगुं वसमरुचा॥ जियनि सन नाल आदि जानंदा याअ स्यायमव
माहनेऽक्षरु अक्षरु खज रु अर्जिया लाअ थं मस्यामा जियनि लक्षव न रुय प्राक्षिडा दयाव
न रुय समरु सुख प्राक्षिया क। हने खरु न जाय न यूप स्यानि आदि धूलिनं जाय यूपः
मिमिलि रूयादि थथिं स त्वा क्षिप निष्क थगु लि धर्म नं पुनिया न याय मरुगु
माव रु रु जा जियनि सना॥ नि ॥ उ व म वा हं य थ म ना रु क या मा यो ना म रु का क्षिप्या ना
मन क्षिप्य अ न विधि अ न क वा मि ॥ थ मा थं जि मि स न रु या थ क्षि ली लं ग थ व रु
पूय नि स कि थं ग थ स न ग थ वि वि या रु थ थं जि मि स न या य रु ना॥ उ ॥ ये न न य नः
सम ना रु न रु द रु य थ रु अ र्था रु ना या व जी व अ द रु दा नं अ व स च र्थ म् रु वा ना द रु ना मे

धनमद्यप्रसादं कुरु नमः। नृत्तगीतवादिनां सा लग्नविषयनवर्णकसुखसाधनार्थं उच्यते न
 महाद्ययनं अकारणं न प्रविशति साभिः॥ ३॥ ॥ हस्तिष्यपनिहर्तृदंष्ट्राः कृमिभेदकम
 नयाशं गुणनधाय गथाः
 वियर्कं भवया कस्य कंदा
 गुलिं मनवा अस्य खं स
 र्थं मगाहं पारव नमः कः
 यकं गन्धनं लयनमद्या कचनं मरिकाहर्तृना नावर्ण्डं निवर्ण्डं नमः कः हिंया लघुना प्र
 लंकि संमचाहं नाजाअनासा उव आदिं थिरीमचाहं वलमययकं अवनस मनः॥ थर्क

वस्तुकस नसमश्रुः थगुमि कृमि सनैः थगवस्तुक का उ क सा न॥ मि ॥ एवं भवार्द
अस्तुक ना मा ॥ ॐ मां वला मया दायः या वच्च जाहि ग मिनीः या वच्च सूर्यो दया न नः अदः
हा दानं अत्रु म च र्यी ॥
न थ अ २ ना म न थ गु लि व
जा हि अ हा अ ग व न ना स
य क म व या क म क क दानं
स ना म न य म य प्र मा द क न नृ य गी क वा दि न मा ला ग न्ध वि ल य न व क क रू प ण धा न न ड
च स य न म हा ण य न अ का न हा उ न प्र हा ना य प्र कि वि न मा मि ॥ ॥ ह कि प नि स न अ स य
गुरु

१ कायकं विविधं पापं वाचिकं पुर्वे धर्मं मन्त्रसाधिप्रकाशं चापानागिपात्रं मूदकाशनं कामं मिथ्याचालनं मृगबाधं पशुभुज्यपात्रमयसंति नृमृविद्याया वा दमिथ्या
हि ॥ कृतिप्रपति कृषि नमिगाया पगीलगी मालन कृषु धालसा सल्लिदुनं खाना पाप सीगा वचन तं या हा पाप प सीगा नमन तं या हा पाप सीगा गथ भाल
सा का पां प्रा निष्ठा य गु ~~समय~~ मेव या धत ह सी ह या गु मेव या र्क हा की मन न य गु अगि सु नि द नं या ना पा प ह ली रु नं रु स स हा य गु म ५४

५०३०

खक्रायमषूकः पूगजिः वक्रणन आदिं काय उव वक्रु कं मन आर्थम कान ॥ रुनं या खन रुय
 मरालः वाद्यथार्यमषूकः त्वा कस्वानै कूयः यक्र गन्धलेपनयायः न स्वाकचिकेन वूय किर्नमय
 आ ॥ रुनं नानावर्षु गुलिः वक्रु न कियः श्रुतलः स्वाकाय लैकिः नाजावः लासाः उव आ
 दिं चानगु रुचं वलसमक यकः अवलसं नयगुः थथिं २ वक्रु कसुः जिय नि न स मरु
 आ ॥ ॥ अने ना रु अष्ट मां गः ६ कर्षा मा र्या ६ म रु का णि का नाः अ न भि र्यः अ न वि
 धिय अ न क ना मि ॥ रु गु न रु ना थ जि प नी स न थू गु लि कि नः च्या का अ ग ण ली न न या य रु नाः
 रु चं स म रु क था ग क प नि स न णि ष्य प नि रु नि र्थ ग थ स न ग थ वि धि या क रु गु न रु नाः
 थः आ अ जि प नि स न रु ल पा ल प नि स न आ हा द य का थ थू गु लि व रु ध र्म जि प नि स न ध न

[illegible]

आक. अरु यवन दान पाछा जाय थि कि कडो ला हागे न धन लपं विष्ठा क. कम लुल पम गि द शु पूरु क थ वि. स्व गी ला हा गि न धन त्र पं विष्ठा क. स मरु
 ला क डी. क न ला व क. थ थिं क प न म धन क स र स मा य कि न ॥ अर्थ ॥

अ० व०

यद्य विरु धि क रु क ध न स म ना व ला कि क ध ना यः अं आ ४ दं फ ट् स्वा हा ॥ धा २ ॥ य० पूजा ॥	
वलिवि य ॥ अं आ भा य पा हा कीं ४ सर्व दू दू दू दू दू स म य मू द्रा प र ऊ क स म ध र्म ला धि स मू	
रु का नां धा नि पू र्ति क नूः	न कां कू नू दं फ ट् स्व लि स्वा हा ॥ वलि सूर्य चाप चा न पू जा
॥ स्नान क न सु नि धा ना क न ॥	क मा य न ॥ नि ॥ थ न ख क ना अ न ना रू णी ल स म न
स मा दान न अ ना ग क ध नी	क था ग ना रु व य ३ रू क स म य क वू द ॥ रु ना थ रु गु नू थ
क य का न धा जि य नि स न	उ रु म गु ध र्म ना दा व वि य धि रु ग वा न पू र्ति ग थि
कू क था ग क रु यू अ धा न सा पू जा या य जी र्ध श ५ थ थि क वू द रु ग वा न ॥	॥ वि यो व न
हा र्प न स ग ना ला क वि द नू रु नू प नू ष द म सा न थि धा रु द वा ना क स नू धा ना क वू द रु	

नाथरुगुह

गवान्॥ हृद्विषये निःस्थः रुगवान् श्रयः अगतिदधनः साः रुकरुविषयः वरुमानसि अक्रगथ
धनसाः अंगुलिः अंगुलिः चादगुलिः वरुमानसि या अविष्कृतः रुनविशानसयूक
शुभाक्रगथा गकः लाकया
कुचिदंः असा रुया अचाद
रुगवकः ॥ ॥ ॥ दच
यनिष्क जायः यागसंग ना
रुगुन रुनाथः पाषवर्णीलः थयिगुलिः धर्मलाय रु अर्थनः चिरुया आलं कालया रुः चिरुः
यनिष्क न या रु समरु या गला यया रु समरु प्रालिपनिथ काये या रु किमिस्तनः वृद्धयागु

यदनायया क. थूगुलिधर्म. धलनपशुना धकगुनूया क. मिथं प्राथनाया दाशना ॥ ० ॥
 थनविसर्जनया चक ॥ ॥ लीलचदनलिपीगा. ध्यानपना वनहं वना. वाध्वगकसु
 मावकीर्ण. विरुनधरुः ॥ ॥ अंकना वसर्वसत्त्वार्थ. सिद्धिदत्ताः
 यथा नूगा. गुरुध्ववृद्धवि ॥ ॥ धर्यपूना यगमनाय च. दं. आ० वरुमधुलमू ॥
 थनमधुलपौलेनूनिया ॥ ॥ य. दाखस्त्रीका काय. वनकान सारक ॥ ॥ थनपी ० ॥ दि
 पूजा. मधुलथिल. आदि ॥ ॥ ध. सगवकयक. चिगपूजा. दक. कि. नि. सला काय ॥
 रूकि. अमायया ० ॥ अ. सुमि. वरुस माफ ॥ ॥ धनमूनिया न. लया नकल. काय ॥ ० ॥

रुक्मः सम्यक् वृद्धः विशाचनसंयन्तः सुगमालोकः विदन्तुरुच्यम्यः क्षत्रविष्णुः क्षात्रवाः
 नाचः सन्ध्या नीचः वृद्धा रुगवन्तः वृद्धः नलायः ॐ दय्यमसुलनिर्थापयामि ॥
 थनखकनः ॥ सा ३ रुचुव
 मसुलनिषलुनाः न वृद्ध
 र्मः महापूज्य अशुशका
 रु ॥ थनरनामकिथकाव
 ग्वलागा वृद्धयागुमसुलः षलुमसुलः थनर वृद्धयाकः ॥ ५ ॥ थनर वृद्धयाकः ॥
 गथि ३ ॥ थनर वृद्धयाकः ॥ ५ ॥ थनर वृद्धयाकः ॥ ५ ॥ थनर वृद्धयाकः ॥ ५ ॥

स्याजविश्वकः समस्तकटां खनाजविश्वकः दकर्वेनियां रुय दू नकाडा नडा धं पू नू व श्रु याः
 वविश्वकः नानासमुनः माचकमजिअः नाहु ल्यमदूगु हावी दः दवः मनूष्यः अस्तनः दकयाः उरु
 मचूजामलि रुयाजवि
 खडासचादमलुलाधिष्ठा
 रुर्दकायागैः राखमलुः
 यप्रतिष्ठस्वाहा ॥ स्नानउयकनय ॥
 अं आर्यप्रहोपा नमि नायै वरुपूर्यप्रतिष्ठस्वाहा ॥ दथस्त ॥ अं आर्यगलुब्रहायै वरुपूर्य ॥
 हुडान ॥ अं आर्यदक्षरुमिकायै वरु ॥ खडास ॥ अं आर्यसमाधिनाजायै वरुपूर्य ॥ थडान ॥

४ निर्वीकल्य नमो नुलं प्रहृषा नमिर्ग मिर्ग या ल्य सर्व न वशां मिनी न वद्य निनी कस ॥ क

ॐ ॥ अं आर्य दक्षरुकाय ॥ ॐ ॥ अं आर्य स माधि नाजाय ॥ ॐ ॥ अं आर्य लंकावनाजाय ॥
 ॐ ॥ अं आर्य स धर्मपूषु लिकाय ॥ ॐ ॥ अं आर्य कथा गगनगुह्यकाय ॥ ॐ ॥ अं आर्य ललित
 विरूपाय ॥ वा ॥ अं आर्य
 याजात्यादि ॥ ॐ ॥ अं आर्य
 सत्वात्मा कर्षणि ॥ ॐ ॥ अं आर्य
 क ॥ अं आर्य स रुद्र धर्मा
 ना ॥ सहायी ना ॥ सहायका ॥ सहानीला ॥ नत्त पंकज ॥ पूषा रुद्र ॥ ॐ ॥ दं वलि ॥ रुद्र ॥ ॐ ॥ अं आर्य
 मिष्टी ॥ पिचूर ॥ पूषा ॥ वरुणी ॥ सन ॥ संधा ॥ वरुणी ॥ धिनि ॥ ॐ ॥ अं आर्य

स्वाहाग खनिासाईरुचवनासाः चर्वदीक्षिताः खयं नू मं दिवसम यादाय यावदावाधिमधु
 लनिखलुनागधर्मसत्रक्षगच्छमिः विनागा नासगुं ॥ हगु नू हनाथग्वनमृजिपनिस्तथअर
 नासनथथं दक्षनायादावः थनियादिनसः थुगुलिधर्मनाययाकः ग्वनाकवाधिसः
 त्वंमधुलसः खलुमक्षलः थनागाः धर्मस्तुजिपनिक्षत्रक्षअनेगधर्मक्षयूवगधि
 दधनसाः नागः क्षमः सायाः माहः आदिं गाजगाजः विष्ठाकः थथिस्तप्रक्षपाजमिगा
 याकः क्षत्रक्षअनेग ॥ मः दाः गागधर्मस्तुक्षानगरैः प्रवदिनैः साकाडपाथिकैः
 पाननिर्वानिकैः कक्षधर्मनलायः नू दपूयसधुलनिर्याकयामिग ० आसंयमधु
 लाधिष्ठानगः सर्वलक्षक्षयूः सर्वलक्षक्षवर्जिकैः समकरुद्रवाचागैः धाषमधुलसाः

एथ न भूषमिव रूधर्मसमि कूकू वर्ग का ना न क विधि सा ल सा ॥ वलिया क १ सध्व ॥ लिङ् १ द
य कं पूजा विधि थं मा म कि पूजा चा क पूजा धू न दा उ विषयि क सा क ४ न क सी धर्म द न कः
धू न का उ क स्त्रान का स ॥ गु नू ड या ध्या क ल्या गु नू रू न ना य ॥ ॥ सि कू व च ॥
जा वं च कि वं च धर्म न ठा क कू रू हा ना उ भ क ॥ रु विषय नि जा व ल य न मा धा न सा जि
व न व रु न या चा का ल थ गु धर्म व रू ध न ल प मा न कि व न व रु न य का ल म रु क सा ध
गु लि धर्म व रू रू हा ना उ कि ध न ल प मा न ॥ ॥ या न रु न्या व रू य नि लो ग कि
का य स क र्म कू क ४ ना ना धर्म भू क रू ला व ल रु व रू क व रू ॥ रु नं द ना या सि कू न कि वा रु रु
ला दि स्था य चि य म क उ थ व रू ग कि म दू प न या रं ग कि म इ थ क ल व का उ ना ना धर्म या ॥ रु

कथा कने ॥ ॥ मघान वा श्री नरु नय न लै य न रा र्या मन सापि न रुक ॥ न नं न नि न्व य नं जि
 न क न अरु र्ण ख ला य म न ड म व या गु द र्थ लो रु या दा त्र का य म न ड य न वि नि य रु न या य गु र्थ
 म न ड वि रु नै रा न य म न ड थ क त्व व न ड ना ना ध र्म धा रु स न स रु य ॥ ॥ गुरु व त्र न य स
 ॥ थ क अरु मि व रु ड पा स क व र्था अरु ना रु कि ध र्म ध न न या क न ग थ धा न सा रु
 या गु स्वा हा न ग या अ चा ना ड न थ र्थ स्व र्ग न ड न द यि ड रु ना नि न्व य नं ॥ ॥
 थ न म लु ल थ ल क स क स नं स्वा न ना न क अ सि ष वि य व रु का ना न क क म लु ल स क
 हा ना रु न रु मा य न ॥ म लु ल वि स र्ज न या च क म लु ल या स्वा न व रु का कि र्थ स चा य क न रु य ॥
 व लि रु क पि स्वा न स र्ग अ न क न रु य च क य जा द र्थ ॥ थ क स कि रु रु या न वि वि रु र्थ ॥ ॥

रमलुलपूजा॥ रावना॥ अं स्वराव बुद्धा सर्वधर्मा ली ह्वराव बुद्धा रं बुद्धा नाना ह्वराव बुद्धा राव
सका रं॥ अं मटिगि सर्वसत्त्वध्वराव बुद्धा ४ की काव ह्वरा माद्य पाहा ला क ह्वरा मा लो नै राव यरु॥
धपः अगुन॥ ॥ अं रं ३॥ अं अ ४ की अ माद्य पाहा ला क ह्वरा मलुल रुद्राव कायः
प्रवत्सका नाय पाद्याय
स्वानमलुल डय के स्वा लसीन॥ अं अ माद्य पाहा मलुल सर्व विद्या नूत्ता नय रं॥ ॥
थनलिहा रं स्वा नवाय के॥ अं अ माद्य पाहा ला क ह्वरा य वरु पूर्य प्रकि रुद्रा हा॥ म
ध्व॥ अं की ४ रुद्रा लोक विरु याय अ माद्य पाहा प्रकि रुद्रा की ४ रुद्रा रुद्रा हा॥ रुद्रा॥ अं अ ४ अ माद्य पा
मा की ४ रुद्रा रुद्रा हा॥ रुद्रा॥ अं अ र्य अ मृता राय वरु पूर्य प्रकि रुद्रा हा॥ थडा॥ अं अ र्य ना नाय

वज्रपुष्पप्रतिष्ठाता ॥ ऊज ॥ ओं आर्य रुक्म देव ॥ ख क ॥ ओं आर्य ऊमा द्यां कृष्णाय ॥ ख थ ॥ ओं
 आर्य वसुन्धराय ॥ ऊ थ ॥ ओं आर्य रुक्मिणी वाय ॥ ऊ क ॥ ओं वज्रा कृष्णाय ॥ पू ॥ ओं वज्रपाक्ष
 य ॥ द ॥ ओं वज्रसूदाय ॥ प
 र्यधूपनाय ॥ न ॥ ओं आ
 कपालं वाय ॥ रा ॥ धूं ॥ नि ॥ लो
 य ॥ मं ॥ ऊ ॥ द ॥ रु ॥ मि ॥ ओं ॥ लो
 लि ॥ न ॥ मा ॥ मि ॥ ऊ ॥ मा ॥ घ ॥ वा ॥ म ॥ नी ॥ ओं ॥ का ॥ न ॥ र ॥ रु ॥ वं ॥ ना ॥ र्थ ॥ क ॥ नू ॥ क्षा ॥ म् ॥ स्ति ॥ ग्ध ॥ मा ॥ न ॥ र्त्त ॥ ऊ ॥ मा ॥ घ ॥ पा ॥ र्त्त ॥ ना ॥ मा ॥ नी
 लोक नार्थ नमाम्यहं ॥ १ ॥

थलि सगिषूई गुन म सु सुदन क मरपूजा ॥ ॥ खक न जाव न जी व य धर्म न न वः
 क अ हा न रु म क पा क्ष ह न्या व र्ध क य नि त्या ग णि का य न स त्क र्म क र्म हे ना ना ध र्म ध र्म ध र्मा व
 स ह प्र व र्ध क म म वा न वाः
 य स क ॥ ॥ जा व क र्म
 व न व ह ल य ना लं म र्क
 य नि रु नं द क्षा पा णि ज न
 कं ग कि म दू थ क ल ल ना ना ना ध र्म ध र्म ध र्म ध र्म ध र्म ध र्म ध र्म ध र्म ध र्म ध र्म ध र्म
 या गु ध न द र्म लो रु या ना व का यं म म ड य न मी ग ह न या यं म म ड चि रु नं रा ल यं म म ड ॥ ध र्मः

मालनाजः नाना धर्मसुः ॥ अमुस न स शय ॥ थन अहमि वरुः उपासक चर्याः अहा नाशुद्धि धर्मया
 दागुप नानः गथ कृयागु स्वाहानन जायाडा चाननः थथं स्वगडा नदयिडा निश्चय न इला ॥
 रहुद्ध कृष्टु नूरा वम दृष्टीः यधै वम दस सिगाः सर्वरु विधान मारुयः श्रीपाठ जा पारुम वा
 भर्तृहि न कम लुलः कर्त्तु दलुभरु मीपू सुकैः वन्द्य नमः स्वर्न शिवर्ताः लोको नैकैः
 यामयडा ॥ श्री ३ अमा यपाठ ला कृष्टु नूरा वम दृष्टीः यधै वम दस सिगाः सर्वरु विधान मारुयः श्रीपाठ जा पारुम वा
 थिगुया वरुः शया अविष्ठा कः सदां पमा सनया र्द विष्ठा कः रुग रुविष्ठा वरुः मान सयाडा विष्ठा कः
 अम नारु कथ गगः शिव सध ननय विष्ठा कः रुय वन दानः पाठ जा पः थन ऊडा नाहान नध ननय
 विष्ठा कः कम लुलः यधै वम दृष्टीः यधै वम दस सिगाः सर्वरु विधान मारुयः श्रीपाठ जा पारुम वा
 क नूरा वम दृष्टीः यधै वम दस सिगाः सर्वरु विधान मारुयः श्रीपाठ जा पारुम वा

सिगा कृष्टु नूरा वम दृष्टीः यधै वम दस सिगाः सर्वरु विधान मारुयः श्रीपाठ जा पारुम वा

विमल कृष्टु नूरा वम दृष्टीः यधै वम दस सिगाः सर्वरु विधान मारुयः श्रीपाठ जा पारुम वा

श्रीपाठ जा पारुम वा